भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र
मोदीपुरम–250110, मेरठ (उ.प्र.)
ICAR-Central Potato Research Institute-Regional Station
Modipuram-250110, Meerut (UP)

डा. मनोज कुमार
संयुक्त निदेशक

पत्रांक : 16–1/2019-20/
दिनांक : 13 दिसम्बर, 2019

सेवा में

निदेशक
उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण उ0प्र0
2–सप्रू मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0)।

विषय : मध्य उत्तर प्रदेश में आलू की फसल में पिछेता झुलसा बीमारी के प्रकट होने के पूर्वानुमान के सम्बन्ध में।

महोदय

संस्थान द्वारा विकसित इन्डो–ब्लाइटकास्ट (पैन इंडिया मॉडल) से पिछेता झुलसा बीमारी का पूर्वानुमान लगाया गया है, जिसके अनुसार मौसम की अनुकूलता के आधार पर आलू की फसल में पिछेता झुलसा बीमारी निकट भविष्य में आने की सम्भावना है। अतः आप से अनुरोध है कि आप अपने स्तर पर उपलब्ध प्रचार–प्रसार के साधनों का प्रयोग करके किसान भाईयों को इसकी सूचना दें।

जिन किसान भाईयों ने आलू की फसल में अभी तक फफूंदनाशक दवा का पर्णीय छिड़काव नहीं किया है या जिनकी आलू की फसल में अभी पिछेता झुलसा बीमारी प्रकट नहीं हुई है, उन सभी किसान भाईयों को यह सलाह दी जाती है कि वे मैन्कोजेब/प्रोपीनेब/क्लोरोथेलोंनील युक्त फफूंदनाशक दवा का रोग सुग्राही किस्मों पर 0.2–0.25 प्रतिशत की दर से अर्थात् 2.0–2.5 किलोग्राम दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर छिड़काव तुरन्त करें। साथ ही साथ यह भी सलाह दी जाती है कि जिन खेतों में बीमारी प्रकट हो चुकी हो उनमें किसी भी फफूंदनाशक – साईमोक्सेनिल + मैन्कोजेब का 3.0 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर (1000 लीटर पानी) की दर से अथवा फेनोमिडोन + मैन्कोजेब का 3.0 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर (1000 लीटर पानी) की दर से अथवा डाईमेथोमार्फ 1.0 किग्रा. + मैन्कोजेब 2.0 किग्रा. (कुल मिश्रण 3.0 किग्रा.) प्रति हैक्टेयर (1000 लीटर पानी) की दर से छिड़काव करें। फफूंदनाशक को दस दिन के अन्तराल पर दोहराया जा सकता है। लेकिन बीमारी की तीव्रता के आधार पर इस अन्तराल को घटाया या बढ़ाया जा सकता है। किसान भाइयों को इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि एक ही फफूंदनाशक का बार–बार छिड़काव ना करें।

भवदीय

13/12/19

(मनोज कुमार)

Telephones: 0121-2575497 (O) **Fax**: 0121-2576584; **Email**: cprirc.modipuram@icar.gov.in; cpric.modipuram@gmail.com.